संत थॉमस स्कूल, धुर्वा, राँची
सत्र (2021-22)

कक्षा- 6 विषय- हिंदी पुस्तक – मंथन

पाठ 5 - चेतक की वीरता

मॉडल उत्तर

मौखिक

उत्तर 1 . चेतक एक घोड़ा था।
उत्तर 2. चेतक लड़ाई के मैदान में चौकड़ी भरता था।
उत्तर 3. चेतक राणा प्रताप का घोड़ा था।
उत्तर 4. चेतक का कौशल उसकी चाल में दर्शनीय था।
उत्तर 5. कविता के अंतिम पद में 'घोड़ा' शब्द का पर्यायवाची 'हय' का प्रयोग किया गया है।

लघूत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. चेतक चौकड़ी भर-भर कर निराला बन गया था।
उत्तर 2. चेतक के तन पर कभी राणा प्रताप का कोड़ा नहीं गिरता था।
उत्तर 3. चेतक की चाल में कौशल नजर आता था।
उत्तर 4. चेतक युद्ध के मैदान में तलवारों के बीच सरपट दौड़ता था।
उत्तर 5. इस पंक्ति का अर्थ है कि चेतक युद्ध के मैदान में नदी के लहरों के समान चाल दिखलाता था।
उत्तर 6. चेतक की वीरता देखकर दुश्मन की सेना दंग रह गयी।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न

उत्तर 1. चेतक एक निराला घोड़ा था। वह वीर, तेज दौड़ने वाला, स्वामी भक्त तथा बहादुर घोड़ा था। वह हवा के समान चलता था। वह तलवारों के बीच दौड़ लगता था। युद्ध के मैदान में वह चौकड़ी भरता था। राणा प्रताप के आँखों के इशारों पर चलता था। उसकी वीरता देखकर दुश्मन भी दंग रह जाते थे।

उत्तर 2. चेतक राणा प्रताप के इशारों को अच्छी तरह से समझता था। वह राणा प्रताप के पुतली के इशारों को अच्छी तरह समझता था। लगाम हिला नहीं कि वह चल पड़ता था। इस कारण राणा प्रताप को कभी भी कोड़ा लगाने की जरूरत नहीं पड़ती थी।

उत्तर 3. चेतक ने दुश्मनों की सेना का मुकाबला बहादुरी के साथ किया। वह दुश्मनों के बीच दौड़ लगता था। वह तलवारों के बीच नदी के लहरों की तरह चलता था। कभी-कभी तो ऐसा लगता था कि वह आसमानी घोड़ा हो, क्योंकि उसकी टाप दुश्मनों के सिर को रौंद देता था।

उत्तर 4. कवि कहते हैं कि थोड़ा सा लगाम कसने पर वह सवार को लेकर उड़ जाता था। वह राणा प्रताप के इशारों को अच्छी तरह समझता था। वह उनकी पुतली के मुड़ने के पहले ही मुड़ जाता था। वह पुतली के इशारों से ही सवार को उसके मनचाहे दिशा में लेकर उड़ जाता था।

<u>पठित पद्यांश प्रश्न</u>

उत्तर 1. (क) लगाम
(ख) निर्भीक
(ग) चेतक नदी की तरह लहर गया।
(घ) चेतक की कुशलता
(ड.) नदी

उत्तर 2(क). इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि चेतक के चाल में गजब का कौशल था। वह भालों के बीच में भी निकल जाता था। वह एक निडर घोड़ा था। जो तलवारों के बीच में भी ढ़ालों की तरह सरपट दौड़ लगाता था।

उत्तर (ख). कवि कहते हैं कि चेतक नदी की लहरों के समान आगे बढ़ता था। वह राह में आए कोई भी कठिनाई को देखकर घबराता नहीं था। वह भयानक बादलों की तरह दुश्मनों की सेना के बीच जाकर उन पर कहर ढाता था।

उत्तर (ग). कवि कहते हैं कि राणा प्रताप का कोड़ा कभी चेतक के तन पर नहीं पड़ा था। वह शत्रुओं के मस्तक पर दौड़-दौड़ कर पहुँच जाता था। जैसे कि वह आसमान से उतर कर आ रहा हो।

भावार्थ

रण बीच चौकड़ी ..... हवा का पाला था।

प्रस्तुत पंक्तियों में चेतक की चाल-ढाल तथा अनोखेपन का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि चेतक युद्ध के मैदान में उछल कूद मचाकर चलता था इसलिए वह रण के मैदान में बाकी घोड़ों से अलग था। वह एक अनोखा घोड़ा था। उसकी चाल इतनी तेज थी जैसे कि उसका मुकाबला हवा से हो रहा हो।

जो तनिक हवा से..... चेतक मुड़ जाता था।

प्रस्तुत पंक्तियों में चेतक की समझदारी का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि हल्का सा लगाम हिलाने पर वह सवार को लेकर उड़ जाता था। वह स्वामी भक्त था और अपने स्वामी के छोटे से छोटे इशारे को बारीकी से समझता था। वह राणा प्रताप की आँखों की पुतली के इशारों से ही उन्हें मनचाहे दिशा में लेकर चला जाता था।

गिरता न कभी..... आसमान का घोड़ा था।

प्रस्तुत पंक्तियों में चेतक के अंदर भरी अनुशासन की भावना का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि चेतक के तन पर राणा प्रताप को कभी कोड़ा लगाने की जरूरत नहीं पड़ी। जैसा कि देखा गया है किसी जानवर से काम लेने के लिए मालिक को कोड़े लगाने की जरूरत पड़ती है लेकिन चेतक के साथ ऐसा नहीं था। वह राणा प्रताप की आज्ञा से दुश्मनों के मस्तक को कुचल देता था। दुश्मनों के सिर पर वह ऐसे दौड़ता था मानो कि वह आसमान से उतरकर आ रहा हो।

था यहीं रहा अब.....पर कहाँ नहीं।

प्रस्तुत पंक्तियों में चेतक के उत्साह और हमला करने की क्षमता का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि चेतक इतना सतर्क, उत्साहित और फुर्तीला था कि वह रण के मैदान में यहाँ-यहाँ भागता रहता था रण के मैदान में ऐसी कोई जगह नहीं होती थी जहाँ वह उपस्थित नहीं रहता था। वह रण के मैदान में दुश्मनों को रौंद देता था।

कौशल दिखलाया..... दौड़ा करवालों में।

प्रस्तुत पंक्तियों में चेतक के कौशल और निडरता का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि चेतक की चाल में गजब का कौशल था। वह भालों के बीच से बड़ी निडरता से और फुर्ती के साथ निकल जाता था। वह बहादुरी का परिचय देते हुए तलवारों की बीच में से ढाल की तरह सरपट दौड़ लगाता था।

बढ़ते नद- सा वह ..... सेना पर घहर गया।

प्रस्तुत पंक्तियों में चेतक का भयानक स्वरूप तथा हमला करने की क्षमता का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि चेतक नदी के समान राह में आए कठिनाइयों की परवाह किए बिना आगे बढ़ता था। वह भयानक और घनघोर बादल के समान दुश्मनों की सेना के बीच जाकर उन पर कहर ढाता था। जिस प्रकार विकराल बादल को देखकर लोग डर जाते हैं तथा सुरक्षित स्थल की तरफ भागने लगते हैं उसी प्रकार चेतक शत्रुओं में भय लाता था और शत्रु इधर-उधर भागते थे।

भाला गिर गया..... घोड़े का ऐसा देख रंग।

प्रस्तुत पंक्तियों में दुश्मनों के बीच उसके छवि का वर्णन किया गया है। कवि कहते हैं कि चेतक का विकराल स्वरूप देखकर दुश्मनों का भाला और तरकश हाथों से गिर जाता था। चेतक के टाप से दुश्मन लहूलुहान हो जाते थे। चेतक की अद्भुत वीरता और गति को देखकर दुश्मन सेना दंग रह जाती थी।

========xxxx=========